कक्षा : ग्यारहवीं – जैन सिद्धान्त रत्नाकर (परीक्षा 23 जुलाई, 2023)

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- **15x1 = (15)**

(a) चारित्र सम्पन्नता से जीव गुण को प्राप्त करता है-
(क) शैलेशीभाव (ख) मैत्री भाव
(ग) समभाव (घ) प्रमोद भाव (क)

(b) जीव को अनुत्तर धर्म श्रद्धा प्राप्त होती है-
(क) संवेग से (ख) निर्वेद से
(ग) अनुकम्पा से (घ) आर्जव से (क)

(c) उत्तराध्ययन सूत्र के उनतीसवें अध्ययन में कुल पृच्छाएँ हैं-
(क) 63 (ख) 93
(ग) 73 (घ) 173 (ग)

(d) माया विजय से जीव किस गुण को प्राप्त करता है-
(क) मार्दव (ख) आर्जव
(ग) क्षमा (घ) संतोष (ख)

(e) किसके प्रत्याख्यान से जीव वीतराग भाव को प्राप्त करता है-
(क) योग (ख) आहार
(ग) सहाय (घ) कषाय (घ)

(f) श्रुत की आराधना करने से जीव को क्या प्राप्त होता है-
(क) कर्मक्षय (ख) आयुक्षय
(ग) अज्ञानक्षय (घ) धनक्षय (ग)

(g) तिर्यंच आयु बन्ध का आश्रव है-
(क) आरंभ (ख) परिग्रह
(ग) माया (घ) मान (ग)

(h) परनिन्दा व आत्म प्रशंसा करने से जीव कर्म का बंध करता है-
(क) उच्चगोत्र (ख) नीच गोत्र
(ग) नरकायु (घ) देवायु (ख)

(i) किसी के द्वारा आचरित पाप को प्रकट करना क्रिया है-
(क) निसर्ग (ख) अनाभोग
(ग) विदारण (घ) दर्शन (ग)

(j) उदय योग्य प्रकृतियों की संख्या हैं-
(क) 120 (ख) 122
(ग) 117 (घ) 148 (ख)

(k) मिश्र गुण स्थान में किस कर्म का बंध नहीं होता हैं-
(क) आयु (ख) गोत्र
(ग) वेदनीय (घ) नाम (क)

(l) तीर्थंकर नाम कर्म का बंध सापेक्ष है-
(क) संयम (ख) सम्यक्त्व
(ग) उपशम (घ) अप्रमत्तता (ख)

(m) सूक्ष्म संपराय गुणस्थान में प्रकृतियों का बंध होता है-
(क) 16 (ख) 17
(ग) 18 (घ) 22 (ख)

(n) मुखवस्त्रिका की लम्बाई होती है-
(क) 16 अंगुल (ख) 32 अंगुल
(ग) 21 अंगुल (घ) 10 अंगुल (ग)

(o) सम्प्रदान में विभक्ति होती है-
(क) चतुर्थी (ख) तृतीय
(ग) द्वितीया (घ) सप्तमी (क)

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- **15x1 = (15)**

(a) काल प्रतिलेखना से जीव ज्ञानावरणीय कर्म का क्षय करता है। (हाँ)
(b) सहाय प्रत्याख्यान से जीव एकीभाव को प्राप्त करता है। (हाँ)
(c) मान विजय से जीव क्षमा भाव को प्राप्त करता है। (नहीं)
(d) विविक्त शय्यासन से वचन गुप्ति की प्राप्ति होती है। (नहीं)
(e) दर्शन सम्पन्नता से जीव संयम गुण को प्राप्त करता है। (नहीं)
(f) धर्म श्रद्धा से साता सुख में आसक्त साधक उससे विरक्त हो जाता है। (हाँ)
(g) कषाय सहित आत्मा के योग को ईर्यापथ आश्रव कहा जाता है। (नहीं)
(h) 'कन्दर्प' सातवें उपभोग परिभोग व्रत का अतिचार है। (नहीं)
(i) महाव्रती, अणुव्रती और सम्यक्त्वी, दान के सुपात्र हैं। (हाँ)
(j) मिश्र मोहनीय कर्म का बंध नहीं होता है। (हाँ)
(k) आहारक द्विक का उदय संयतों को अप्रमत्त अवस्था में ही संभव है। (नहीं)
(l) प्रकृति के सर्व संक्रमण से प्रकृति की सत्ता समाप्त हो जाती है। (हाँ)
(m) मोहनीय कर्म का उदय 10वें गुणस्थान तक रहता है। (हाँ)
(n) स्थानकवासी परम्परा की मौलिक मान्यता है कि 32 आगम ही प्रमाण ग्रन्थ हैं। (हाँ)
(o) वीर निर्वाण संवत् 1100 के बाद का कोई ग्रन्थ आगम रूप में मान्य नहीं है। (नहीं)

प्र.3 निम्नलिखित में क्रम से सही जोड़ी मिलाकर उत्तर रिक्तस्थान में लिखिए:- **15x1 = (15)**

(a)	लोभ विजएणं	(क) सम्यक्त्व मोहनीय	संतोसं
(b)	करण सच्चेणं	(ख) तेरहवें गुणस्थान तक	करणसत्तिं
(c)	खंतीएणं	(ग) संतोसं	परीसहे जिणइ
(d)	पडिरूवयाए	(घ) दंसण विसोहिं	लाघवियं
(e)	धम्मकहाए	(च) करणसत्तिं	निज्जरं जणयइ
(f)	चउवीसत्थएणं	(छ) परीसहे जिणइ	दंसण विसोहिं
(g)	शुभः	(ज) लाघवियं	पुण्यस्य
(h)	अदत्तादानं	(झ) निज्जरं जणयइ	स्तेयम्
(i)	मूर्च्छाः	(य) पुण्यस्य	परिग्रहः
(j)	बंध योग्य नहीं	(र) प्रथम गुणस्थान	सम्यक्त्व मोहनीय
(k)	आहारक द्विक बंध	(ल) सहेली	संयम सापेक्ष
(l)	नरकायु का बंध	(व) कमाना	प्रथम गुणस्थान
(m)	सातावेदनीय बंध	(क्ष) संयम सापेक्ष	तेरहवें गुणस्थान तक
(n)	सही	(त्र) परिग्रहः	सहेली
(o)	अज्ज	(ज्ञ) स्तेयम्	कमाना

प्र.4 मुझे पहचानो :- **15x1 = (15)**

(a)	मुझ से जीव प्रह्लाद भाव को प्राप्त करता है।	क्षमापना
(b)	मुझ से आश्रव द्वारों का निरोध होता है।	पच्चक्खाण
(c)	मेरे प्रत्याख्यान से जीव अयोगी भाव को प्राप्त करता है।	योग
(d)	मुझ से जीव एकाग्रता को प्राप्त करता है।	मन समा धारणता
(e)	मुझ से जीव को ज्ञान-दर्शन-चारित्र रूप बोधि लाभ को प्राप्त करता है।	स्तव-स्तुति मंगल
(f)	हम दोनों चारों आयुओं के सामान्य बंध हेतु हैं।	शील रहितता एवं व्रत रहितता
(g)	मैं पाँचों व्रतों में प्रधान व्रत हूँ।	अहिंसा व्रत
(h)	मैं एक प्रवृति रूप भावना हूँ, मेरा विषय गुणीजन है।	प्रमोद भावना
(i)	मैं गोत्र कर्म की एक प्रकृत्ति हूँ, मेरा उदय 14वें गुणस्थान तक रहता है।	उच्च गोत्र
(j)	मैं नाम कर्म की एक प्रकृत्ति हूँ, मेरा उदय केवल 13वें, 14वें गुणस्थान में ही हो सकता है।	तीर्थंकर नाम
(k)	मैं नाम कर्म की एक प्रकृति हूँ मेरा उदय बाटे बहती अवस्था में होता है।	आनुपूर्वी नाम
(l)	मैं मोहनीय कर्म की एक प्रकृति हूँ मेरा उदय तीसरे गुणस्थान में नियमा होता है।	मिश्र मोहनीय
(m)	मेरी मान्यता है कि सावद्य योग से विरत ही धर्म तीर्थ है।	स्थानकवासी
(n)	मैं श्वेताम्बर अमूर्तिपूजक सम्प्रदाय हूँ मेरा उदय वि.सं. 1815 में हुआ।	तेरापंथ
(o)	मैं एक जैन सम्प्रदाय हूँ मेरा मानना है- ‘‘ स्त्रीणां न तद्भवे मोक्षः’’।	दिगम्बर

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-दो वाक्यों में उत्तर दीजिए- **8x2 = (16)**

(a) वैयावृत्य से जीव किस गुण की प्राप्ति करता है ?
उ. वैयावृत्य से तीर्थंकर नाम गोत्र का बंध होता है।
(b) तप से जीव किस गुण को प्राप्त करता है ?
उ. तप से जीव व्यवदान (विशुद्धि) प्राप्त करता है।
(c) अनाश्रवपन की प्राप्ति किससे होती है ?
उ. संयम से अनाश्रवपन की प्राप्ति होती है।
(d) अकिंचनता की प्राप्ति किससे होती है ?
उ. मुक्ति या निर्लोभता से अकिंचनता की प्राप्ति होती है।
(e) पाप का आश्रव किसे कहा गया है ?
उ. पाप का आश्रव अशुभ योग को कहा गया है।
(f) बन्ध योग्य प्रकृतियों में से प्रथम गुणस्थान में कौन-कौन सी प्रकृतियों का बंध नहीं होता है ?
उ. बंधयोग्य प्रकृतियों में प्रथम गुणस्थान में आहारक द्विक व तीर्थंकर नाम का बंध नहीं होता है।
(g) सद्भाव सत्ता किसे कहते हैं ?
उ. अमुक समय में प्रकृतियों की सत्ता का विद्यमान रहना, सद्भाव सत्ता है।
(h) करण कारक किसे कहते हैं ?
उ. अपने कार्य की सिद्धि में कर्त्ता जिसकी ज्यादा सहायता लेता है, उसे करण कहते हैं।

प्र.6 निम्न प्रश्नों के उत्तर दो-तीन पंक्तियों में लिखिए : - **8x3 = (24)**

(a) आत्म निन्दा से किस-किस गुण की प्राप्ति होती है ?
उ. आत्म निंदा से पश्चात्ताप होता है, पश्चात्ताप से वैराग्ययुक्त होता हुआ जीव करण-गुण-श्रेणि को प्राप्त होता है और करण-गुण श्रेणि को प्राप्त अनगार मोहनीय कर्म को नष्ट कर देता है।

(b) प्रतिपृच्छा से जीव को किस-किस गुण की प्राप्ति होती है ?

उ. प्रतिपृच्छा से सूत्र, अर्थ और तदुभय (दोनों के तात्पर्य को) विशुद्ध कर लेता है और कांक्षामोहनीय कर्म को विच्छिन्न कर देता है।

(c) काय गुप्ति से जीव को किस-किस गुण की प्राप्ति होती है ?

उ. काय गुप्ति से जीव संवर(आश्रव-निरोधरूप) को प्राप्त होता है। संवर के द्वारा कायगुप्त होकर जीव फिर से होने वाले पापाश्रव का निरोध कर लेता है।

(d) अकाम निर्जरा व बालतप में क्या अन्तर हैं ?

उ. पराधीनतावश न चाहते हुए भी जिसमें भोजन, काम-भोग एवं क्रोधादि का त्याग होता है, वह अकाम निर्जरा कहलाती है। जबकि आत्म शुद्धि का लक्ष्य न रखकर, भौतिक सिद्धि हेतु अज्ञानपूर्वक किया जाने वाला तप बालतप कहलाता है।

(e) दान के चार अंग कौनसे हैं ?

उ. 1. दाता स्वयं 2.द्रव्य-दी जाने वाली वस्तु 3. दान की विधि या तरीका और
4. पात्र- दान लेने वाला।

(f) निर्ग्रन्थ धर्म के कालक्रम से प्राप्त अनेक नामों में से कोई 6 नाम लिखिए।

उ. नोटः इनमें से कोई 6 नाम मान्य
निर्ग्रन्थ धर्म- निर्ग्रन्थों द्वारा प्ररुपित।
जैन धर्म- जिन भगवन्तों द्वारा उपदिष्ट।
सुविहित परम्परा- आगम मर्यादानुसार।
लोकागच्छ- लोंकाशाह द्वारा क्रियोद्धारक।
सनातनी धर्म- जैन धर्म के शुद्ध आचार पक्ष को रखा।
ढँढिया- प्रारंभ में मुनिराज ढूँढों (पुराने मकान) में ठहरे।
साधुमार्गी- साधु मर्यादा को सम्यक् रूप से स्थापित किया।
बाईस टोला- संवत् 1772 में पूज्यपाद आचार्य प्रवर श्री धर्मदास जी के 22 टोलों में विचरण।
स्थानकवासी- विक्रम की 19वीं शताब्दी के अन्त में।

(g) निम्नलिखित वाक्यों का हिन्दी में अनुवाद कीजिए-

उ. (1.) मम पुत्तो पावत्तो दुगुंच्छइ- मेरा पुत्र पाप से घृणा करता है।
(2.) अहं बालाण फलाणि दामि- मैं बालकों को फल देता हूँ।

(h) निम्नलिखित वाक्यों का प्राकृत में अनुवाद कीजिए-

उ. (1.) वीतराग को नमस्कार - वीयरागाय नमो।
(2.) हम सब आचार्य को देखेंगे - वयं आयरियं पासिहिमो।